

## छत्तीसगढ़ में ट्रांसजेंडर सांस्कृतिक कार्यक्रम

### चर्चा में क्यों?

हाल ही में रायपुर के महंत घासीदास संग्रहालय के मुक्ता काशी मंच पर राज्य स्तरीय [ट्रांसजेंडर सांस्कृतिक कार्यक्रम](#) का आयोजन किया गया।

यह आयोजन [दहेज जैसी सामाजिक बुराई](#) के खिलाफ एक सक्रिय पहल थी, जो आज भी देश के वभिन्न हिस्सों में विशेषकर अवकिसति राज्यों में प्रचलित है।

### मुख्य बंदि:

- यह कार्यक्रम [संस्कृति एवं पुरातत्त्व वभिग तथा छत्तीसगढ़ मतिवा संकल्प समिति](#) द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया गया था।
- इंद्रधनुषी और छत्तीसगढ़ी थीम पर रैंप पर थरिक्ते ट्रांस-मॉडल्स के साथ-साथ ट्रांसजेंडर कलाकारों ने राजस्थानी, [कथक](#), [ओडिसी](#) तथा [लावणी](#) का मशिरण नृत्य भी प्रस्तुत किया।
- वरषिठ समुदाय के सदस्यों ने सभी कलाकारों को नारयिल, शॉल और स्मृति चहिन देकर सम्मानित किया।

### ट्रांसजेंडर

- [ट्रांसजेंडर व्यक्ती अधिनियम, 2019](#) के अनुसार, ट्रांसजेंडर को ऐसे व्यक्ती के रूप में परिभाषित किया गया है जिसकी लिंग पहचान उसके जैविक लिंग से मेल नहीं खाती।
- इसमें अंतर-लिंगीय भनिनता वाले ट्रांस-व्यक्ती, लिंग-वषिम लैंगिक और कनिनर, हजिडा, अरावनी तथा जोगता जैसी सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान वाले लोग शामिल हैं।
- भारत की [2011 की जनगणना](#) देश की 'ट्रांस' आबादी की संख्या को शामिल करने वाली पहली जनगणना थी। रिपोर्ट में अनुमान लगाया गया है कि 4.8 मिलियन भारतीय ट्रांसजेंडर के रूप में पहचाने जाते हैं।